

नो वल्लभातिथयो गृहाः । उपानमन्गच्छतो ऽस्य सत्क्रियाश्च पदे पदे ॥ RĀ-  
ĒA-TAR. 3, 224. ohne Ergänzung: मत्संयोगः कथमुपनमेत्स्वप्रज्ञो ऽपि  
MEGH. 88, v. l. mit dem acc. der Person und instr. der Sache sich Jmd  
mit Etwas nähern, Jmd mit Etwas aufwarten: पतिं च — प्रियेस्त्वैस्तेरु-  
पनमेत् BHĀG. P. 6, 19, 16. — उपनत 1) hergebogen, einwärts gebogen:  
यूप ÇAT. BR. 11, 7, 3. KĀTJ. ÇA. 6, 1, 8. अग्नेर्धाडुपनतं यूपस्य कुर्याद्वह्नि-  
ष्ठावर्णिताम् KĀTH. 26, 6. — 2) unterworfen, der sich in JmDs Gewalt be-  
geben hat, der sich ergeben hat, der sich unter JmDs Schutz gestellt  
hat: दण्डेनोपनतं शत्रुमनुगृह्णाति यो नरः MBH. 1, 5623. RAGH. 8, 80. पुरा  
प्रतिज्ञोपनता नागानां दासभावतः । निष्कष्टकामो जननीं गृह्णः KATHĀS.  
12, 138. 20, 5. — 3) zu Theil geworden, zugeführt, zu Wege gebracht,  
nahe gebracht, da seiend H. 1494. अकामोपनतेनेव — एनसा RAGH. 10,  
40. परलोकोपनतं जलाञ्जलिम् 8, 67. प्रभावोपनतैः — पुष्पैः 5, 52. अका-  
ण्डपातोपनता कं न लक्ष्मीर्विमोक्षयेत् KATHĀS. 5, 2. RĀĒA-TAR. 4, 180. क-  
स्यात्यतं सुखमुपनतं (v. l. für उपगतं) दुःखमेकाक्षतो वा MEGH. 108. का-  
तोदत्तः मुहूर्तुपनतः 98. यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् VIKR. 62, 73.  
149. ÇĀK. 113. RAGH. 12, 102. अस्थानोपनतयमुनासंगम् MEGH. 52, v. l. für  
उपगत. यस्त्विह वा अस्त्विभ्याम्नाति यत्किंचनोपनतम् was ihm aufstößt  
BHĀG. P. 5, 26, 18. यल्लोकशास्त्रोपनतं न राति न तदिच्छति was Jmd zu-  
geführt wird d. i. zukommt (BURNOUR: qui ne savent pas l'un donner,  
l'autre accepter ce qui, d'après la loi et la monde, doit être offert ou  
reçu) 4, 27, 25. ०भयं dem Gefahr drohet PĀNĒAT. III, 235. ध्यातोपनतं da  
seiend, sobald man nur daran gedacht hat, VID. 210. 261. KATHĀS. 22,  
9. उपनते मेघसमये Spr. 74. — Vgl. उपनति, ०नामुक. — caus. Jmd vor  
Jmd (gen.) hinführen, Jmd vorstellen: (तम्) आनाय्य मक्तो ज्ञातिसंघ-  
स्योपनामयित्वा उपनाम्य च SADDH. P. 4, 25, a. hinreichen(?): (पिण्डान्)  
कुमार्या उपनामयेत् GOBH. 2, 1, 3.

— नि 1) sich biegen, sich legen, sich niederstrecken, sich niederbew-  
gen, sich erniedrigen; act.: (अग्रे) उच्छ्वस्व नि नम् वर्धमान् आ त्वाद्य  
वसंवः सद्गु R. V. 10, 142, 6. med.: नि घ्नं नमध्वं भवेता सुपाराः 3, 33, 9. नि  
ते नैते पीप्यानेव योषां 10. न्यस्यै धूम्रा जन्मो नमत्ताम् 10, 42, 6. — 2)  
niederbeugen: यो नल्लान्यनमद्योर्जसा R. V. 2, 24, 2. न पर्वता निनमै (dat.  
inf.) 3, 36, 1.

— निम्, partic. निर्णत ausgebogen, hervorstehend KĀTH. 26, 6 (s. u.  
उप उपनत 1.). निर्णतोदर MBH. 7, 7894. HARIV. 15904. R. 5, 25, 20.  
fälschlich निर्णतोदर geschrieben MBH. 7, 6792. HARIV. 13029. R. 3, 7, 6.  
24, 13. 6, 74, 8. Nicht recht deutlich ist die Bed. von निर्णततम् Nib.  
8, 5: नपादित्यनतरायाः प्रज्ञाया नामधेयं निर्णततमा भवति; der Comm.:  
पुत्रस्तावत्पितुर्नीचैर्नतः (verbeugt sich tief vor dem Vater) ततो ऽपि नी-  
चैर्नततमः पौत्रः.

— परि 1) sich zur Seite biegen, von einem Elephanten, der im Begriff steht  
mit seinen Fangzähnen einen Stoss zu thun: पर्यणसीत् ÇĀK. 18, 27. Ein Ele-  
phant in dieser Stellung heisst परिणत H. 1221. MEGH. 2. DAÇAK. 73, 1; vgl.  
caus. 3. लज्जापरिणतैः (वदनकमलैः) aus Scham sich zur Seite wendend  
BHARTĀ. 1, 4. यत्किं परि यो नम बiega dich uns zur Seite so v. a. trifft uns nicht  
A. V. 4, 2, 2. — 2) (sich umbiegen) sich verändern, sich umwandeln in  
(instr.): परिणामस्वभावा त्रिगुणा नापरिणाम्य लणमवतिष्ठते Schol. in  
WILSON'S SĪMHAJAK. S. 64. जगदाकारेण परिणमते MADHUS. in Ind. St. 4,

23, 18. VEDĀNTAS. (Allah.) S. 63, N. योगिनां परिणामन्विमुक्तये — विनयः  
KIR. 13, 44. परिणत verändert, umgewandelt, verwandelt in: ता एवौ-  
षधयः कालपरिणामात्परिणतवीर्याः (भवन्ति) SUÇR. 1, 20, 11. स्तोतोमूर्त्या भु-  
वि परिणता in Flussgestalt verwandelt MEGH. 46. नदीभावेन परिणता  
VIKR. 113. शरीराकारपरिणते ऽन्नाद्ये ÇĀKH. zu BRH. ĀR. UP. S. 101. त्र-  
पात्तर<sup>०</sup> SĀH. D. 22, 14. AMAR. 46. — 3) reif werden: परिणत gereift.  
reif AK. 3, 2, 46. H. 1485. MBH. 5, 1109. 12, 671. HARIV. 7870. MEGH. 18.  
VARĀH. BRH. S. 82 (80, b), 8. verdaut werden: प्रस्तं परिणमेच्च पत् MBH.  
5, 1107. PĀNĒAT. 232, 7. आकारस्य सम्यकपरिणतस्य SUÇR. 1, 43, 4. reifen  
in übertr. Bed., alt werden: परिणमन्ति न पल्लवानि bleiben stets jung  
und frisch KIR. 5, 37. माधवपरिणतपत्रा कतिपयकुसुमेव कुन्दलता MĀ-  
LAV. 43. R. 1, 26. परिणतवयसु reifen, vorgerückten Alters SUÇR. 1, 368,  
10. PĀNĒAT. 197, 18. 211, 13. जरापरिणत HIT. 1, 146. परिणतो बुद्ध्या वय-  
सा च reifen Verstand und Alter R. 2, 43, 15. यस्य बुद्धिः परिणता HARIV.  
4196. SĀH. D. 2, 4. परिणतप्रज्ञ MBH. 2, 1949. सूर्ये परिणते सति als die  
Sonne im Untergehen war 4, 1036. परिणतारूपा die untergehende Sonne  
ÇĀK. 31. ०शरद् Spätherbst MEGH. 109. BHARTĀ. 3, 86, v. l. परिणते काले  
nachdem eine geraume Zeit verflossen war BHĀG. P. 9, 1, 12. एकाकि-  
नि वनवासिन्यराज्यलक्ष्मण्यनोतिशास्त्रसे । सद्योत्कटे मृगपतौ रक्षिते गिरिः  
परिणमन्ति ॥ wird reif, erhält seine wahre Bedeutung PĀNĒAT. ed. orn.  
1, 3. — Vgl. परिणति, परिणाम. — caus. 1) reif machen, zeitigen: पा-  
च्यांश्च सर्वान्परिणामयेद्यः ÇVETĀÇV. UP. 5, 5. pass. reif werden: दैवेन प-  
रिणाम्यता HARIV. 2937. परिणाम्यमानः प्रूरः RATNAG. 6, 9. Vgl. परिणाम-  
यितृ. — 2) zu Ende bringen (eine Zeit). परिणाम्य निशां तां तु सुख-  
मुताः MBH. 6, 3847. 7, 792. — 3) sich zur Seite schwenken: निमित्तं म-  
न्यमानास्तु परिणाम्य मरुगजाः । जगुर्दुर्बिभुदुष्टैव चित्राण्यभरणानि  
च ॥ MBH. 8, 1143; vgl. oben u. 1. — desid. s. परिणिंसु.

— विपरि pass. vom simpl. oder caus. sich umwandeln in: कर्तरि  
शब्दित्यतः कर्तृभक्त्यानुवर्तते । तच्च प्रथमया विपरिणाम्यते Schol. zu P.  
3, 1, 87. KĀÇ. zu P. 4, 1, 163.

— प्र sich verbeugen, sich verbeugen vor (dat. gen. loc. acc.): प्रणम्य  
प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामकम् BHĀG. 11, 44. M. 2, 197. RAGH. 2, 21. HIT.  
40, 20. प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ BHĀG. P. 6, 19, 9. Z. d. d. m. G. 14, 573, 26. सा-  
ष्टाङ्गं प्रणम्य PĀNĒAT. 33, 12. प्रणोर्भुवि मूर्धभिः BHĀG. P. 3, 3, 28. प्रण-  
मान R. GORR. 2, 3, 11. प्रणम्य लोकपालेभ्यः M. 8, 23. R. 5, 5, 6. 6, 101, 26.  
RAGH. 13, 70. PĀNĒAT. 159, 21. प्राणमं भूपस्त्रिपुरघ्न्या ARĀ. 10, 57. R. GORR.  
1, 68, 11. ÇĀK. 109, 16. PĀNĒAT. III, 7. इन्द्राय स प्रणमते MBH. 5, 1130. R.  
2, 25, 4. 4, 33, 33. प्रणम्य शिरसा तदा । ब्राह्मणानां पितृणां च देवतानां च  
MBH. 5, 7248. R. 4, 13, 24. 5, 31, 32. बलीयसि (v. l. बलीयसे) प्रणमताम्  
KĀM. NITIS. 9, 50. प्रणम्य शिरसा देवम् BHĀG. 11, 14. MBH. 3, 788. 2710.  
5, 7064. R. 1, 2, 28. पौद्रे प्रणम्य रामस्य 4, 42, 15. MĀLAV. 46, 8. ÇĀK. 73,  
12. PĀNĒAT. 24, 12. VID. 249. VET. in LĀ. 1, 1. ÇUK. in LĀ. 38, 7. प्राणम-  
द्विजुतेजसम् MBH. 3, 8681. 4, 197. HARIV. 2719. 14991. R. 2, 52, 73. 4, 13.  
26. (ताम्) अञ्जलिभिः प्रणम्युः RAGH. 14, 18. VIKR. 87, 18. KATHĀS. 20, 26.  
BHĀG. P. 1, 9, 4. प्रणमे त्वा MBH. 3, 2413. R. 4, 39, 40. pass.: नृपैः प्रणम्य-  
मानः KATHĀS. 20, 224. — partic. प्रणत vorgebeugt, gebeugt, mit ge-  
beugtem Oberkörper stehend: कुवक्र इव प्रणतः ÇĀKH. BR. 28, 2. अ<sup>०</sup>  
GOBH. 4, 2, 18. भृत्यवत्प्रणतस्तस्यै ARĀ. 2, 9. M. 11. 195. SĀV. 3, 11. R. 1,